चित्रलेखा उपन्यास में पाप और पुण्य के संदर्भ में मानवीय अनुभवों से प्रेरित मनोवैज्ञानिक चिंतन की गहनता

==========

डॉ. विनोद विश्वासराव पाटील
M.A., M.Ed., Ph.D.
dr.vinod.v.patil@gmail.com

==========

सारांश

भगवतीचरण वर्मा हिन्दी साहित्यकारों में अग्रणी माने जाते है | भगवतीचरण वर्मा का साहित्य हिन्दी साहित्य की अमूल्य ऐसी धरोहर है | उनका 'चित्रलेखा' यह उपन्यास जितना कल प्रासंगिक था, उतना ही आज है और उतना ही आने वाले समय में होगा, इसे हम कालजयी उपन्यास मान सकते है | प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने श्वेतांक और विशालदेव इन दो शिष्यों के माध्यम से रत्नाम्बर का पाप और पुण्य की खोज करना बडा ही रोचक है | एक ही गुरू के दो शिष्य होकर भी वह अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर पाप और पुण्य की परिभाषा अलग-अलग देते है | जिसपर रत्नाम्बर उन्हें कहते है, पाप और पुण्य और कुछ नहीं होता है, व्यक्ति के जीवन में जिस प्रकार के अनुभव आते है, उसको जिस तरह जीवन जीना पडता है उसी के आधार पर वह पाप और पुण्य की परिभाषाएँ करता है | इसीलिए श्वेतांक जीवन के अनुभवों को जीने वाले, वासना और मदिरा में तृप्त रहने वाले बीजगुप्त को देवता मानता है तो वही संसार की मोहमाया का त्याग करने वाले कुमारगिरी को पापी कहता है | विशालदेव बीजगुप्त को पापी और कुमारगिरी को देवता मानता है | प्रस्तुत उपन्यास मानव को जीवन जीने की प्रेरणा देता है तथा मार्गदर्शन करता है | मानव पाप और पुण्य के भेद में न पडकर सिर्फ अपना जीवन अच्छे से व्यतित करे और अपने जीवन से दूसरों के जीवन में खुशी लाये यही जीवन की सार्थकता है |

संबोध शब्द

पाप और पुण्य, गुरू और शिष्य, श्वेतांक, विशालदेव, बीजगुप्त, कुमारगिरी, चित्रलेखा, भोगविलास, त्याग, वासना, उपभोग

==========

- **प्रस्तावना**

'चित्रलेखा' यह उपन्यास हिंदी साहित्य के अग्रणी उपन्यसकार भगवतीचरण वर्मा द्वारा लिखा गया कालजयी उपन्यास है | यह उपन्यास आने वाले काल में भी उसी तरह प्रासंगिक रहेगा जितना आज है | क्योंकि प्रस्तुत उपन्यास में ऐसे दो मुद्दों को आधार बनाया गया है जो मानव सृष्टी के साथ ही शायद निर्माण हुए होंगे | मानव अपने जीवन को खुशहाल बनाने के लिए कई प्रयोग करते गए और उसी के साथ शुरू हुआ यह पाप-पुण्य का सफर | प्रस्तुत उपन्यास के लेखक भगवतीचरण वर्मा का जन्म 30 अगस्त, 1903 को उन्नाव जिले के शफीपूर गाँव में हुआ था | आपने इलाहाबाद से बी.ए., तथा एल.एल.बी. की शिक्षा हासिल की | प्रारम्भ में आप कविता लेखन करते थे | उसके बाद आपका खिंचाव गद्य धाराओं की ओर अधिक रहा | आपका रचना संसार काफी समृद्ध रहा है | आपके उपन्यासों में 'पतन', 'तीन वर्ष', 'भूले-बिसरे चित्र', 'अपने खिलौने', 'टेढे-मेढे रास्ते', 'सीधी सच्ची बातें', 'सामर्थ्य और सीमा', 'रेखा', 'वह फिर नहीं आई', 'सबहिं नचावत राम गोसाईं', 'थके पाँव', 'प्रश्न और मरीचिका', 'युवराज चूण्डा', 'चाणक्य धुप्पल' और 'चित्रलेखा' | चित्रलेखा का पहला संस्करण 1934 को प्रकाशित हुआ था और जिसको पढ़कर मैंने प्रस्तुत शोध आलेख लिखा है वह उसका अठारहवाँ संस्करण है जो राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से 2019 में प्रकाशित हुआ है |

- **शोध विषय विवेचन**

चित्रलेखा उपन्यास मानवीय विचारों एवं अनुभूति को उच्चतम चेतना एवं चिंतन प्रदान करता है | वह ज्ञान एवं अनुभव की अटूट श्रृंखला निर्माण करता है | उपन्यास का मुखपृष्ठ ही पढनेवाले की विचारशक्ति को प्रभावित करता है, वह वाक्य है, ''पाप क्या, पुण्य क्या ? सोचा बहुत, समझा क्या ?''1 साथ ही इस उपन्यास के संदर्भ में मलपृष्ठ पर जो विचार अंकित है उससे ही पूरा उपन्यास पढने की जिज्ञासा जागृत हो जाती है | ''चित्रलेखा की कथा पाप और पुण्य की समस्या पर आधारित है | पाप क्या है ? उसका निवास कहाँ हैं ?- इन प्रश्नों का उत्तर खोजने के लिए महाप्रभु रत्नाम्बर के दो शिष्य, श्वेतांक और विशालदेव, क्रमश: सामंत बीजगुप्त और योगी कुमारगिरि की शरण में जाते हैं | इनके साथ रहते हुए श्वेतांक और विशालदेव नितान्त भिन्न जीवनानुभवों से गुजरते हैं | ओर उनके निष्कर्षों पर महाप्रभु रत्नाम्बर की टिप्पणी होती है, 'संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है | हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पडता है' |''2

प्रस्तुत उपन्यास चित्रलेखा नामक आत्यंतिक सुंदर नर्तकी के इर्द-गिर्द घुमता है | लेकिन फिर भी उपन्यास की कथावस्तु को, तथा पाप-पुण्य के भेद को समझने के लिए उपन्यास की शुरूआत महाप्रभु रत्नाम्बर के शिष्य श्वेतांक के प्रश्न से होती है, ''और पाप !''3 इसी प्रश्न के उत्तर को खोजने के लिए महाप्रभु रत्नाम्बर अपने शिष्य श्वेतांक और विशालदेव को अलग-अलग स्थलों पर छोडने जाते है | श्वेतांक को बीजगुप्त के यहाँ तो विशालदेव को कुमारगिरि के यहाँ छोड आते है | बीजगुप्त जीवन का आनंद भोग-विलास में मानता है तो कुमारगिरि त्याग में | एक जगह जहाँ वासना है, भोग-विलास है, मदिरा है, नृत्य है तो दूसरी और त्याग है, तेज है, प्रताप है, शारीरिक और आत्मिक बल से वासनाओं पर विजय पाना है | ऐसे दो विपरीत जगहों पर पाप क्या है ? इस प्रश्न को उत्तर खोजने की कथावस्तु है उपन्यास चित्रलेखा |

प्रस्तुत उपन्यास की मुख्य नायिका चित्रलेखा है | जो आज एक नर्तकी का जीवन जी रही है | लेकिन उसका सफर नर्तकी तक कैसे आ पहुँचा यह बहुत ही दु:खद कहानी है | चित्रलेखा का जीवन सुख और दु:खों का ऐसा सफर है, जिसमें वह निरंतर प्रवाहमान रही है | वह एक विधवा ब्राह्मण स्त्री है | जब वह विधवा होती है उसकी उम्र सिर्फ अठारह वर्ष की होती है | जो वह उम्र उसके जीवन के आनंद का लाभ लेने की है, उसी उम्र में वह दु:ख के समंदर में डूब जाती है | लेकिन इस उम्र की धारा को रोक पाना असम्भव होता है | उसके जीवन में क्षत्रिय और शूद्र से उत्पन्न वर्णशंकर पुत्र कृष्णादित्य का प्रवेश होता है | कृष्णादित्य चित्रलेखा की तपस्या को भंग कर उसे फिर जीवन की आनंद हिलोर उठाने के लिए उत्साहित करता है | कृष्णादित्य उसे विश्वास दिलाने के वचन लेता है कि, ''जब तक हम दोनों जीवित रहेंगे, हम दोनों साथ रहेंगे, कोई भी हम दोनों को अलग न कर सकेगा |''4

चित्रलेखा और कृष्णादित्य का प्रेम अंतिम छोर तक पहुँच जाता है | चित्रलेखा गर्भवती हो जाती है | दोनों को अपने परिवार घर से बाहर कर देते है | चित्रलेखा जैसी सुन्दरी को अपने साथ भिखारी जैसा जीवन व्यतित करने को लेकर कृष्णादित्य को जीवन से अधिक मृत्यु प्रिय हो जाती है | चित्रलेखा को एक नर्तकी अपने यहाँ पर आश्रय देती है | चित्रलेखा को एक पुत्र होता है, लेकीन वह भी काल की कोख में समा जाता है | इसलिए चित्रलेखा नर्तकी व्यवसाय को अपना लेती है |

चित्रलेखा के सौंदर्य के सामने पाटलिपुत्र का जनसमुदाय सब कुछ लुटाने को तौयार है | लेकिन चित्रलेखा ने फिर एक बार वौराग्य जीवन अपना लिया है | कोई पुरूष उसे आकर्षित नहीं कर सकता | लेकिन पाटलिपुत्र का सामंत बीजगुप्त उससे प्रेम करने लग जाता है | शुरआती ना के बाद प्रेम का अंकुर धीरे-धीरे पल्लवित हो जाता है | पूरा पाटलिपुत्र जानता है बीजगुप्त और चित्रलेखा की प्रेमकहानी |

श्वेतांक और बीजगुप्त एक ही गुरू के शिष्य होने के कारण बीजगुप्त उसे सेवक ना मानते हुए अपना भाई मानता है | चित्रलेखा को छोडने और लाने का कार्य वह उसी पर बिनासंकोच सौप देता है | बीजगुप्त और चित्रलेखा इन दोनों के एकांत के बीच भी श्वेतांक की उपस्थिति होती है | श्वेतांक बीजगुप्त के साथ रहकर मदिरापान को सेवन करने लगता है | श्वेतांक को एक दिन चित्रलेखा पूछती है कि, ''तुम्हारे स्वामी कहाँ है?''5 चित्रलेखा के मुख से यह प्रश्न सुनकर उसे बुरा लगता है | याने एक ब्रह्मचारी होकर भी उसमें षड्रिपूयों का प्रवेश होने लगता है | चित्रलेखा श्वेतांक से कहती है कि, मुझे प्यास लगी है, तो श्वेतांक उसे जल देता है | तो चित्रलेखा कहती है, ''श्वेतांक ! तुम अब भी नहीं समझ सके | पिपासा तृप्त होने की चीज नहीं | आग को पानी की आवश्यकता नहीं होती, उसे घृत की आवश्यकता होती है, जिससे वह और भडके | जीवन एक अविकल पिपासा है | उसे तृप्त करना जीवन का अन्त कर देना है | मुझे जल की आवश्यकता नहीं, मुझे मदिरा चाहिए |''6 चित्रलेखा ने अपने जीवन से अलौकिक ज्ञान प्राप्त किया है | उसका ज्ञान और बातें किताबी बातें नहीं हैं वह जीवन के अनुभव की बातें है | जीवन का संपूर्ण सत्य ज्ञान उसकी बातों में छिपा हुआ है |

कुमारगिरि विशालदेव का जीवन का सही अर्थ समझाने का प्रयास करते है | उनका मानना है कि, जीवन का सही अर्थ भोग्य वस्तुओं का त्याग करना है | वासनाओं का दमन करके शांति को प्राप्त करना है | आत्मिक शक्ति से शारीरिक शक्ति को बल देना है | जीवन का नाम भोग नहीं योग है | कुमारगिरि का तेज देखकर कई लोग उनके आगे आदर के साथ नतमस्तक हो जाते है | उनके वचनों के आगे कई विद्वान हार मानते है | विशालदेव अपने गुरू से आत्मिक शक्ति को प्राप्त करने के लिए सिखना आरम्भ करता है |

इधर श्वेतांक भोग-विलास के जीवन को अंतिम आनंद समझता है उधर विशालदेव भोग्य वस्तुओं के त्याग को | श्वेतांक चित्रलेखा को अपने प्रेम का प्रस्ताव तक दे देता है, वह यह तक नहीं सोचता की वह उसके स्वामी बीजगुप्त की प्रेमिका हैं | वह उनके साथ मदिरापान करने लगता है |

एक बार चित्रलेखा और बीजगुप्त रात्रि का समय अधिक होने के कारण कुमारगिरि की कुटिया में ठहरने के लिए जाते है | कुमारगिरि को बीजगुप्त के ठहरने से नही लेकिन चित्रलेखा के वहाँ ठहरने पर आपत्ति होती है | चित्रलेखा इस संदर्भ में कुमारगिरि से कहती है, ''योगी ! तपस्या जीवन की भूल है, यह मैं तुम्हें बताए देती हूँ | तपस्या

की वास्तविकता है आत्मा का हनन |"7 लेकिन यहाँ बातों ही बातों में चित्रलेखा कुमारगिरि के वचनों से तथा तेज से प्रभावित हो जाती है, और बीजगुप्त को पता न चले इसलिए पहली बार झूठ का सहारा लेती है |

एक बार सम्राट चन्द्रगुप्त के महायज्ञ में आमंत्रित सभी मान्यवरों के सामने कुमारगिरि और चाणक्य के बीच ईश्वर है या नहीं इस बात को लेकर चर्चा होती है, जहाँ कुमारगिरि सभी विद्वानों पर विजय पा लेते है | लेकिन चित्रलेखा अपनी अकाट्य तर्कशक्ति से कुमारगिरि को ही पराजित कर देती है | अपने आपको इंद्रियों पर विजय प्राप्त की है कहने वाले योगी क्रोधित हो जाता है और कहते है कि, "इस सभा में कोई भी व्यक्ति मुझे पराजित नहीं कर सकता और न मुझको दंड देने का कोई व्यक्ति साहस ही कर सकता है |"8

चित्रलेखा कुमारगिरि से प्रभावित होने के कारण उनसे क्षमायाचना करती है, तथा उन्हें दीक्षा देने के लिए कहती है | योगी कुमारगिरि उसे समझाते है कि वह जो मार्ग अपनाना चाहती है वह काँटों से भरा है, वह उस पर चल नहीं पायेगी | लेकिन चित्रलेखा अपनी बातों से योगी को सोचने पर मजबूर करने लगती है | चित्रलेखा अपनी बातों से योगी कुमागगिरि के इतने निकट पहूँच जाती है कि, दोनों के श्वास गरम हो जाते है | लेकिन वहाँ विशालदेव के आने के कारण चित्रलेखा का कार्य अधूरा रह जाता है | चित्रलेखा और योगी कुमारगिरि के सम्बन्ध में बीजगुप्त का वक्तव्य बहुत कुछ बयान करता है, जो जीवन का सच है, "चित्रलेखा और कुमारगिरि! कोई भी विजयी नहीं है, दोनों ही पराजित हुए हैं | परिस्थिति का चक्र तेजी के साथ घूम रहा है, उसी फेरे में ये दोनों प्राणी फँस गए हैं |"9 इतना कहकर बीजगुप्त श्वेतांक को चित्रलेखा को बधाई देने भेज देता है, जहाँ चित्रलेखा श्वेतांक से वचन लेकर कुमारगिरि के तरफ खींचाव की बात बता देती हैं |

कर्म की गति को कौन पहचान सकता है | इधर चित्रलेखा और कुमारगिरि के बीच प्रेम का पल्लवन हो रहा होता है वही दूसरी और पाटलिपुत्र के वयोवृद्ध सामंत आर्यश्रेष्ठ मृत्युंजय अपनी पुत्री यशोधरा के लिए बीजगुप्त को न्योता देते है | साथ ही वह चित्रलेखा को और कुमारगिरि को भी आमंत्रित करते है | श्वेतांक यशोधरा को देखकर उससे प्यार करने लगता है, लेकिन बीजगुप्त यशोधरा से विवाह करने से इन्कार कर देता है क्योंकि वह चित्रलेखा से सच्चा प्यार करता है | मृत्युंजय चित्रलेखा को बीजगुप्त को समझाने का कार्य सौंपते हैं | चित्रलेखा अपना सारा वौभव त्यागकर योगी कुमारगिरि की कुटियाँ में चली जाती है | योगी कुमारगिरि चित्रलेखा को दीक्षा देने के लिए तौयार हो जाते है और अपने शिष्य विशालदेव को उसके लिए कुटियाँ का इंतजाम करने के लिए कहते है | विशालदेव को मुस्कुरात हुआ देख योगी कुमारगिरि क्रोधित हो जाते है और कहते है कि, "नहीं, कुटी की कोई आवश्यकता नहीं | चित्रलेखा मेरी कुटी में रहेगी | समझा विशालदेव ! मेरी निर्बलता पर उपहास करने वाले नवयुवक ! याद रखना, मैं तुम्हारा गुरू हूँ और तुमसे ऊँचा हूँ | मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि साधना और तपस्या में तपा हुआ व्यक्ति कितना बलवान हो सकता है |"10

बीजगुप्त को चित्रलेखा के राजपाट छोडकर तथा स्वयं को छोडकर जाने का दु:ख होता है | वह एकांत में कहीं जाना चाहता है | वह यह बात श्वेतांक को बताता है | श्वेतांक मृत्युंजय के यहाँ जाकर यशोधरा से मिलता है और यह बात बताता है | मृत्युंजय भी उनके साथ जाने को तौयार होते है | काशी जाने के सफर में यशोधरा बीजगुप्त के विचारों से काफी प्रभावित होती है | लेकिन काशी के इस सफर में श्वेतांक को बीजगुप्त और यशोधरा का इस तरह निकट आना दु:खी करता है | वह अपने स्वामी बीजगुप्त की बातें तक काटने लगता है, विरोध करने लगता है | लेकिन फिर भी यशोधरा और बीजगुप्त में प्रेम का पल्लवन होता है पर वह व्यक्त नहीं करते | बीजगुप्त चित्रलेखा के इस निर्णय से दु:खी है इसलिए सोचता है कि, मैं क्यों दु:खी रहूँ | वह यशोधरा से विवाह करने की सोचता है |

इधर बीजगुप्त के कथन के अनुसार योगी कुमारगिरि चित्रलेखा के सौंदर्य से प्रभावित होते है | लेकिन चित्रलेखा कुटियाँ में आकर बदल चुकी है | कुमारगिरि चित्रलेखा से मिलन की बात करते है तो चित्रलेखा उन्हें धुत्कारती है | स्वयं पहले वह उसी विचार से यहाँ आयी थी, लेकिन यहाँ के माहौल ने उसके विचार परिवर्तित कर दिये थे | लेकिन आज स्वयं योगी कुमारगिरि अपनी योगसाधना भूलकर वासना में लिप्त होना चाह रहे थे | चित्रलेखा उन्हें धुत्कार देती है | कुमारगिरि संभल जाते है, उससे क्षमा याचना करते है और स्वयं को बदलने की बात करते है | लेकिन योगी कुमारगिरि के मन से चित्रलेखा का चेहरा हटता ही नहीं है | वह चित्रलेखा से बीजगुप्त और यशोधरा के विवाह की झूठी बात कहकर उससे सम्बन्ध बना लेते है | लेकिन जौसे ही चित्रलेखा को सच बात मालूम होती है वह योगी कुमारगिरि को भला-बूरा कहकर उसकी कुटियाँ त्याग देती है | जाते हुए वह कहती है, "तुमने मुझे धोखा दिया, वासना के कीडे ! तुम मुझसे झूठ बोले | तुम्हारी तपस्या विफल हो जायेगी और तुम्हें युगों-युगों नरक में जलना पडेगा | मैं जाती हूँ - अब तुम मुझे रोक न सकोगे |"11 इतना कहकर चित्रलेखा पाटलिपुत्र लौट आती है |

इधर बीजगुप्त श्वेतांक से यशोधरा से विवाह करने की बात करता है | श्वेतांक बीजगुप्त से स्वयं के लिए ही यशोधरा से विवाह की बात करता है | श्वेतांक की इस बात से बीजगुप्त दु:खी होकर उसे खरी-खोटी सुनाता है | श्वेतांक बीजगुप्त से क्षमायाचना करता है | लेकिन बीजगुप्त के मन में विचारों का द्वंद्व शुरू हो जाता है | वह कभी चित्रलेखा के

बारे में सोचता है, कभी स्वयं के बारे में, तो कभी श्वेतांक के बारे में | बहुत कुछ सोचने के बाद वह मृत्युंजय के यहाँ जाकर श्वेतांक के लिए यशोधरा का हाथ माँगता है | मृत्युंजय पद और प्रतिष्ठा की बात करते है तो बीजगुप्त स्वयं का सामंत पद और अपना संपूर्ण वौभव श्वेतांक को दान करने की घोषणा कर श्वेतांक और यशोधरा का विवाह पक्का करवाकर आते है |

चित्रलेखा लौट आने के बाद अपने महल में ही रहती है, बीजगुप्त से तक नहीं मिलती | इधर श्वेतांक और यशोधरा की विवाह की तौयारी बडी धूमधाम से हो रही है | सभी मान्यवरों को न्यौता भेजा गया है | श्वेतांक स्वयं चित्रलेखा को अपने विवाह का न्यौता देने को जाते है और घटीत सारी घटना का वृत्तांत सुनाते है | चित्रलेखा विवाह के दिन न आकर किसी और दिन आने का वचन देती है | सम्राट चन्द्रगुप्त के साथ-साथ कई मान्यवर विवाह में उपस्थित होते है | सम्राट बीजगुप्त के संदर्भ में कहते है, "बीजगुप्त ! तुम एक महान आत्मा हो | तुमने असम्भव को सम्भव कर दिखाया | तुम मनुष्य नहीं देवता हो | आज भारतवर्ष का सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य तुम्हारे सामने मस्तक नमाता है |"12 सारे अतिथि भी अपना मस्तक नमाते है |

विवाह संपन्न होता है, बीजगुप्त महल से निकलते है और पर्यटन की शुरूआत करते है | उनके सारे नौकर उनके साथ हो लेते है तो बीजगुप्त उन्हें रोककर श्वेतांक के साथ रहने को कहते है | अंधेरे में बीजगुप्त चल रहे है और उनके पीछे-पीछे किसे के चलने की आहट सुनाई देती है | वह छाया निकट आती है, वह छाया होती है चित्रलेखा | चित्रलेखा अपने साथ घटित होई सारी घटना बीजगुप्त को बता देती है | तो बीजगुप्त उसे कहता है, "चित्रलेखा ! तुमने बहुत बडी भूल की | तुमने मुझे समझने में भ्रम किया | तुम मुझसे क्षमा माँगती हो? चित्रलेखा ! प्रेम स्वयं एक त्याग है, विस्मृति है, तन्मयता है | प्रेम के प्रांगण में कोई अपराध ही नहीं होता, फिर क्षमा कैसी !"13 चित्रलेखा के आग्रह पर एक रात उसके यहाँ ठहरकर दूसरे दिन चित्रलेखा भी अपना सारा वौभव छोडकर बीजगुप्त के साथ भिखारी बनकर देश पर्यटन पे निकल पडती है |

एक वर्ष बाद महाप्रभु रत्नाम्बर अपने दोनो शिष्यों को बुलाकर पूछते है कि, बीजगुप्त और कुमारगिरि इन दोनों में कौन पापी है ? श्वेतांक कहता है कि, "महाप्रभु ! बीजगुप्त देवता हैं | संसार में वे त्याग की प्रतिमूर्ति है | उनका ह्रदय विशाल है | और कुमारगिरि पशु है | वह अपने लिए जीवित है, संसार में उसका जीवन व्यर्थ है | वह जीवन के नियमों के प्रतिकूल चल रहा है | अपने सुख के लिए उसने संसार की बाधाओं से मुख मोड लिया | कुमारगिरि पापी है !"14 श्वेतांक की बात सुनने के बाद महाप्रभु विशालदेव से पूछते है, तो विशालदेव कहता है, "महाप्रभु ! योगी कुमारगिरि अजित हैं | उन्होंने ममत्व को वशीभूत कर लिया है | वे संसार से बहुत ऊपर उठ चुके हैं | उनकी साधना, उनका ज्ञान और उनकी शक्ति पूर्ण है | और बीजगुप्त वासना का दास है | उसका जीवन संसार के घृणित भोग-विलास में है | वह पापी है-पापमय संसार का वह एक मुख्य भाग है !"15 वैसे देखा जाये तो श्वेतांक और विशालदेव एक ही गुरू महागुरू रत्नाम्बर के शिष्य है, दोनों ने एक जौसी शिक्षा ग्रहण की है लेकिन वे वास्तव में जिस स्थिति में रहे, जिनके सहवास में रहे उन्हें उस स्थिति के आधार पर, उन व्यक्तियों के आधार पर, उनके गुणों के आधार पर वे पाप-पुण्य की परिभाषा करने लगे | अर्थात मनुष्य परिस्थितियों का दास है, परिस्थिति जैसी होती है, वैसे ही मनुष्य ढलता जाता है | हर व्यक्ति को अपने जीवन में, कर्म में आनंद और सुख चाहिये फिर वह संन्यासी हो या गृहस्थ | संन्यासी सांसारिकता को छोड सुखी है तो गृहस्थ सांसारिकता को पाकर सुखी है |

इन दोनों की बातें सुनकर महाप्रभु रत्नाम्बर इन दोनों को जो उपदेश देते है वही इस आलेख का निष्कर्ष तथा उपन्यास का भी निष्कर्ष है, "संसार में पाप कुछ भी नहीं है, वह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है | प्रत्येक व्यक्ति एक विशेष प्रकार की मन:प्रवृत्ति लेकर उत्पन्न होता है-प्रत्येक व्यक्ति इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है | अपनी मन:प्रवृत्ति से प्रेरित होकर अपने पाठ को वह दुहराता है- यही मनुष्य का जीवन है | जो कुछ मनुष्य करता है, वह उसके स्वभाव के अनुकूल होता है और स्वभाव प्राकृतिक है | मनुष्य अपना स्वामी नहीं है, वह परिस्थितियों का दास है-विवश है | कर्ता नहीं है, वह केवल साधन है | फिर पुण्य और पाप कैसा ? 'संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है | हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पडता है' |"16

अत: कहा जा सकता है कि, पाप और पुण्य इनकी परिभाषाएँ बडी विस्तारीत और लचीली है, जो जैसा चाहे इन्हें मोड सकता है | क्योंकि सुख की परिभाषा कोई नहीं कर सकता | समय बडा बलवान है, वह व्यक्ति को ऐसे कार्य करने को मजबूर कर देता है, जो उसने सोचे भी नहीं होंगे | पूरा उपन्यास पढने के बाद पाठकों के यह बात ध्यान में आयेगी ही क्योंकि चित्रलेखा तो एक पात्र मात्र है पर वह एक जगह बीजगुप्त जैसे सामंत को देवता का स्थान देती है वही योगी कुमारगिरि को उसके ध्येय से डगमगा देती है | हमारा जीवन भी बिल्कूल ऐसा ही है | इसलिए मानव जीवन का एक सबसे बडा सच यही है कि, वह अपना जीवन जीने का आनंद उठाये |

- **निष्कर्ष**

1. पाप और पुण्य इनकी परिभाषाएँ बडी विस्तारीत और लचीली है, जो जैसे चाहे इन्हें मोड सकता है | क्योंकि सुख की परिभाषा कोई नहीं कर सकता |
2. समय बडा बलवान है, वह व्यक्ति को ऐसे कार्य करने को मजबूर कर देता है, जो उसने सोचे भी नहीं होंगे |
3. पूरा उपन्यास पढने के बाद पाठकों के यह बात ध्यान में आयेगी ही क्योंकि चित्रलेखा तो एक पात्र मात्र है पर वह एक जगह बीजगुप्तजैसे सामंत को देवता का स्थान देती है वही योगी कुमारगिरि को उसके ध्येय से डगमगा देती है |
4. मानव जीवन भी बिल्कूल ऐसा ही है | इसलिए मानव जीवन का एक सबसे बडा सच यही है कि, वह अपना जीवन जीने का आनंद उठाये |
5. इस उपन्यास का सार ही यही है कि, 'संसार में पाप कुछ भी नहीं है, यह केवल मनुष्य के दृष्टिकोण की विषमता का दूसरा नाम है | हम न पाप करते हैं और न पुण्य करते हैं, हम केवल वह करते हैं जो हमें करना पडता है' |
6. प्रस्तुत उपन्यास मानव को जीवन जीने की अविरत प्रेरणा देता है तथा मार्गदर्शन करता है | मानव पाप और पुण्य के भेद में न पडकर सिर्फ अपना जीवन अच्छे से व्यतित करे और अपने जीवन से दूसरों के जीवन में खुशी लाये यही जीवन की सार्थकता है |

- **संदर्भ सूची**

1. चित्रलेखा, भगवतीचरण वर्मा, (2019), राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. दरियागंज, नई दिल्ली - मुखपृष्ठ से
2. चित्रलेखा, भगवतीचरण वर्मा, (2019), राजकमल प्रकाशन, प्रा.लि. दरियागंज, नई दिल्ली - मलपृष्ठ से
3. वही पृ. 07
4. वही पृ. 13
5. वही पृ. 27
6. वही पृ. 28
7. वही पृ. 38
8. वही पृ. 49
9. वही पृ. 62
10. वही पृ. 101
11. वही पृ. 122
12. वही पृ. 193
13. वही पृ. 196
14. वही पृ. 199
15. वही पृ. 199
16. वही पृ. 200